Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal, Impact Factor: 6.1

ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 5; 2025; Page No. 11-14

Special Issue of International Seminar (23rd - 24th August, 2025)
On the Topic
Indian Knowledge System (IKS): Challenges & its Application in Higher Education for Sustainable Development
By
Faculty of Education, IASE (DU), Sardarshahar, Churu, Rajasthan - 331403

भारतीय ज्ञान परम्परा (IKS) के नैतिक एवं दार्शनिक आधार

हेमन्त कुमार पंचोली

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17177322

Corresponding Author: हेमन्त कुमार पंचोली

भूमिका

भारतीय ज्ञान परम्परा (Indian Knowledge System - IKS) विश्व की सबसे प्राचीन और समग्र ज्ञान परम्पराओं में से एक है, जो केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित न होकर जीवन के विविध पहलुओं - नैतिकता, धर्म, योग, दर्शन, कला, भाषा और पर्यावरण - में संतुलन और समरसता स्थापित करती है। IKS का उद्देश्य न केवल ज्ञान का संप्रेषण है, बल्कि व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास के माध्यम से एक समावेशी एवं मूल्यनिष्ठ समाज की रचना करना भी है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में IKS की प्रासंगिकता विशेष रूप से चरित्र निर्माण, पर्यावरणीय चेतना, सामाजिक जिम्मेदारी, और सतत विकास जैसे क्षेत्रों में उभर कर सामने आती है। यह प्रणाली विद्यार्थियों में न केवल ज्ञान, बल्कि व्यवहारिक निर्णय क्षमता, सहिष्णुता और सह-अस्तित्व की भावना भी उत्पन्न करती है। वर्तमान समय में IKS का पुनरावलोकन और पुनःस्थापन न केवल सांस्कृतिक जागरूकता को पुनर्जीवित करता है, बल्कि वैश्विक स्तर पर नैतिक और स्थायी विकास के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करता है।

मूलशब्द: भारतीय ज्ञान परम्परा, नैतिक शिक्षा, चरित्र निर्माण, सतत विकास, योग और दर्शन, सहअस्तित्व और समरसता, सामाजिक उत्तरदायित्व, पर्यावरणीय चेतना, शिक्षा में IKS की प्रासंगिकता, वैदिक दर्शन

1. प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परम्परा (Indian Knowledge System - IKS) विश्व में सबसे प्राचीन और समृद्ध ज्ञान परम्पराओं में से एक है। यह केवल ज्ञान का भंडार नहीं है, बल्कि जीवन को समझने, अनुभव करने और संतुलित तरीके से जीने की प्रणाली है। IKS ने सदियों से मानव, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने, सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विकास, और व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में जहां तकनीकी दक्षता, व्यावसायिक कौशल और तथ्यों का संकलन प्राथमिकता पाते हैं, वहीं IKS व्यक्तित्व विकास, सामाजिक जिम्मेदारी,

नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी न केवल बौद्धिक रूप से विकसित होते हैं, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक दृष्टि से भी सशक्त बनते हैं।

IKS का स्वरूप बहुआयामी है। इसमें दर्शन, धर्म, योग, आयुर्वेद, साहित्य, भाषा, कला और सामाजिक आचरण का समन्वय है। यह ज्ञान केवल सैद्धान्तिक नहीं, बल्कि व्यवहारिक, नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी जुड़ा हुआ है।

भारतीय ज्ञान परम्परा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है मानव जीवन में संतुलन और सद्भाव स्थापित करना। यह शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा या प्रमाणपत्र तक सीमित नहीं रखती, बल्कि जीवन में नैतिकता, न्याय, करुणा और सहिष्णुता के विकास पर केंद्रित है। साथ ही, IKS विद्यार्थियों में सर्जनात्मक सोच, समस्या सुलझाने की क्षमता और पर्यावरणीय चेतना विकसित करने में सहायक है। यह पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक जीवन के बीच एक संतुलन और मार्गदर्शन प्रदान करता है।

2. भारतीय ज्ञान परम्परा का स्वरूप (Nature of IKS)

भारतीय ज्ञान परम्परा के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं:

1. **समग्र दृष्टिकोण (Holistic Approach):** IKS जीवन को बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से समझने की शिक्षा देता है। यह शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यवहार और अनुभव के माध्यम से ज्ञान को वास्तविक जीवन से जोड़ती है।
   - यह दृष्टिकोण व्यक्तिगत विकास और सामाजिक कल्याण दोनों को सुनिश्चित करता है।
   - विद्यार्थियों में संतुलित जीवन दृष्टि और निर्णय क्षमता विकसित करता है।
2. **धर्म और कर्तव्य (Dharma and Duty):** जीवन का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य समाज और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व निभाना है। गीता में कहा गया है कि "कर्तव्य का पालन ही जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है।"
   - यह दृष्टिकोण छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक मूल्यों को मजबूत करता है।
   - विद्यार्थियों में कर्तव्यनिष्ठा और समर्पण की भावना पैदा करता है।
3. **सहअस्तित्व और समरसता (Co-existence and Harmony):** "वसुधैव कुटुम्बकम्" का संदेश मानवता और वैश्विक भाईचारे की शिक्षा देता है। यह दृष्टिकोण आज के वैश्वीकरण और सांस्कृतिक विविधता के युग में अत्यंत प्रासंगिक है।
   - यह दृष्टिकोण धार्मिक और सांस्कृतिक सहिष्णुता को बढ़ावा देता है।
   - सामाजिक सौहार्द और सहयोग की भावना को बढ़ाता है।
4. **ज्ञान और आचरण का संतुलन (Balance of Knowledge and Conduct):** ज्ञान का उद्देश्य केवल सैद्धान्तिक शिक्षा नहीं है, बल्कि नैतिक और व्यवहारिक निर्णय लेने में मदद करना है।
   - विद्यार्थियों में सकारात्मक मूल्य और नैतिक नेतृत्व का विकास करता है।
   - समाज और व्यक्तिगत जीवन में समानता और न्याय का दृष्टिकोण विकसित करता है।
5. **सतत विकास (Sustainable Development):** IKS प्राकृतिक संसाधनों और जीवन शैली में संतुलन बनाए रखने की शिक्षा देता है।
   - यह दृष्टिकोण आज के पर्यावरणीय और आर्थिक संकटों में भी प्रासंगिक है।
   - स्थायी जीवन शैली और समाज के प्रति जिम्मेदारी सिखाता है।

3. नैतिक आधार (Ethical Foundations of IKS)

भारतीय ज्ञान परम्परा का नैतिक आधार मानव और समाज की भलाई पर केंद्रित है।

- **अहिंसा (Non-Violence):** जैन और बौद्ध दर्शन में अहिंसा को सर्वोच्च मूल्य माना गया है। यह केवल हिंसा से बचाव नहीं, बल्कि सभी प्राणियों के प्रति करुणा और सम्मान को दर्शाता है।
  - विद्यार्थियों में सहानुभूति और करुणा विकसित होती है।
  - हिंसा और द्वेष के स्थान पर शांति और सह-अस्तित्व की भावना आती है।
- **सत्य (Truth):** उपनिषद और गीता में सत्य का पालन व्यक्तिगत और सामाजिक स्थिरता का आधार है।
  - यह छात्रों को ईमानदार और भरोसेमंद नागरिक बनाता है।
  - समाज में विश्वास और नैतिकता स्थापित करता है।
- **कर्तव्यबोध (Duty Consciousness):** व्यक्ति का कर्तव्य उसके समाज, परिवार और पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व है।

- विद्यार्थियों में समर्पण और अनुशासन का विकास होता है।
- नैतिक और सामाजिक निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।

- **न्याय और समरसता (Justice and Harmony):** समाज के प्रत्येक वर्ग और व्यक्ति को समान अवसर और सम्मान प्रदान करना।
  - यह दृष्टिकोण सामाजिक समानता और न्याय सुनिश्चित करता है।
  - विद्यार्थी में सहिष्णुता और टीम भावना विकसित होती है।
- **पर्यावरणीय चेतना (Environmental Ethics):** वन, जल और जीव-जंतु के प्रति सम्मान और संरक्षण।
  - छात्रों में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।
  - सतत और जिम्मेदार जीवन शैली को बढ़ावा देता है।

4. दार्शनिक आधार (Philosophical Foundations of IKS)

IKS का दार्शनिक आधार जीवन दृष्टि, व्यवहार और समाज के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है।

1. **उपनिषद और वेदांत:** आत्मा और ब्रह्म का ऐक्य, जीवन का अंतिम लक्ष्य आत्म-ज्ञान।
   - व्यक्ति को आत्मज्ञान और आंतरिक संतुलन प्रदान करता है।
   - जीवन के उद्देश्य और दिशा को स्पष्ट करता है।
2. **गीता का संदेश:** निष्काम कर्म और कर्तव्य पालन।
   - विद्यार्थियों में कर्तव्यपरायणता और निष्ठा विकसित करता है।
   - मानसिक संतुलन और दबाव में निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाता है।
3. **जैन दर्शन:** अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांतवाद - विविध दृष्टिकोणों को स्वीकार करना।
   - समाज में सहानुभूति और सामूहिक सौहार्द बढ़ाता है।
   - व्यक्ति को आत्मसंयम और विवेकशीलता सिखाता है।
4. **बौद्ध दर्शन:** चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग - दुख और उसकी समाप्ति की शिक्षा।
   - मानसिक शांति और संतुलन प्रदान करता है।
   - समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण और धैर्य विकसित करता है।
5. **योग और सांख्य दर्शन:** मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक संतुलन।
   - विद्यार्थियों में स्वास्थ्य और मानसिक स्थिरता बढ़ाता है।
   - ध्यान और अभ्यास के माध्यम से सकारात्मक जीवन शैली सिखाता है।
6. **अद्वैत वेदांत:** "ब्रह्म सत्यं, जगत मिथ्या" - अनुभवात्मक और एकात्मिक दृष्टिकोण।
   - व्यक्ति को संपूर्ण और एकीकृत जीवन दृष्टि प्रदान करता है।
   - आत्म-ज्ञान और विश्व के प्रति समझ बढ़ाता है।

5. शिक्षा में प्रासंगिकता (Relevance in Education)

IKS का आधुनिक शिक्षा में समावेश विद्यार्थियों को मूल्य आधारित जीवन, सामाजिक जिम्मेदारी और मानसिक संतुलन विकसित करने में सहायक है।

- चरित्र निर्माण: नैतिक मूल्यों का विकास, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और कर्तव्यबोध।
- सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप नागरिक: IKS छात्रों को जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बनने की दिशा में मार्गदर्शन करता है।
- स्वास्थ्य और कल्याण: योग, आयुर्वेद और ध्यान से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार।
- सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संवेदनशीलता: भाषा, साहित्य और लोक परम्परा के माध्यम से।
- सर्जनात्मक सोच और नवाचार: IKS छात्रों में रचनात्मकता और समस्या सुलझाने की क्षमता बढ़ाता है।
- सामाजिक नेतृत्व और सहयोग: विद्यार्थी समूह कार्य और सामुदायिक सेवा में बेहतर योगदान देते हैं।

6. समकालीन महत्व (Contemporary Relevance)

- **सतत विकास:** प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग।
- **वैश्विक नैतिकता:** विश्व शांति और अंतर-सांस्कृतिक भाईचारे को प्रोत्साहन।
- **स्वास्थ्य और कल्याण:** योग और आयुर्वेद को WHO द्वारा मान्यता।
- **सामाजिक संतुलन:** जाति, धर्म और भाषा से ऊपर उठकर मानवता को प्राथमिकता।

- **तकनीकी और डिजिटल युग में मार्गदर्शन:** IKS डिजिटल शिक्षा और ई-लर्निंग के माध्यम से भी प्रासंगिक।
- **सतत रोजगार और कौशल विकास:** IKS ग्रामीण और स्थानीय ज्ञान के आधार पर रोजगार और नवाचार की दिशा दिखाता है।

7. चुनौतियाँ (Challenges)

- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में IKS को पर्याप्त महत्व नहीं।
- पाश्चात्य दृष्टिकोण के प्रभाव से स्वदेशी मूल्यों की कमी।
- अनुसंधान और नवाचार में कमी।
- नीति निर्माण और संस्थागत सहयोग में अभाव।
- ग्रामीण और आदिवासी ज्ञान का मुख्यधारा में सम्मिलन कठिन।
- डिजिटल और तकनीकी संसाधनों का सीमित उपयोग।
- युवा पीढ़ी में IKS के प्रति जागरूकता की कमी।

8. समाधान और सुझाव (Solutions and Recommendations)

- IKS को उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में अनिवार्य करना।
- अनुसंधान केंद्र और नवाचार परियोजनाएँ स्थापित करना।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म और तकनीक के माध्यम से प्रचार।
- ग्रामीण और आदिवासी ज्ञान को मुख्यधारा में जोड़ना।
- नीति स्तर पर संस्थागत सहयोग सुनिश्चित करना।
- शिक्षक प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से IKS का प्रचार।
- वैश्विक साझेदारी और ज्ञान आदान-प्रदान को बढ़ावा देना।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय ज्ञान परम्परा केवल अतीत की धरोहर नहीं है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य की दिशा भी निर्धारित करती है। इसके नैतिक और दार्शनिक मूल्य आधुनिक शिक्षा और समाज में मानव-केंद्रित दृष्टिकोण स्थापित करने में सहायक हैं।

IKS का समावेश शिक्षा, अनुसंधान और नीति-निर्माण में न केवल चरित्र निर्माण, मानसिक संतुलन और सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ाता है, बल्कि यह विद्यार्थियों और समाज को सतत विकास, न्याय और वैश्विक भाईचारे की दिशा में मार्गदर्शन भी प्रदान करता है।

आज आवश्यकता है कि IKS को मुख्यधारा की शिक्षा, अनुसंधान और नीति निर्माण में पूरी तरह शामिल किया जाए।

10. संदर्भ सूची (References)

1. उपनिषद एवं भगवद्गीता - विभिन्न अनुवाद एवं टीकाएँ।
2. महावीर स्वामी - आचारांग सूत्र।
3. गौतम बुद्ध - धम्मपद।
4. शंकराचार्य - ब्रह्मसूत्र भाष्य।
5. पतंजलि - योगसूत्र।
6. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन - भारतीय दर्शन।
7. हजारी प्रसाद द्विवेदी - भारतीय संस्कृति के स्वरूप।
8. AICTE – Indian Knowledge System: An Introduction, 2021.
9. Sharma C. A Critical Survey of Indian Philosophy, 2000.
10. UNESCO – Indigenous Knowledge and Sustainable Development, 2019.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.